॥ ॐ ॥

भज गोविन्दम्

↑

॥ ॐ ॥

भज गोविन्दम्

1. भज गोविन्दं भज गोविन्दम् गोविन्दं भज मूढ़मते।
सम्प्राप्ते सन्निहिते काले न हि न हि रक्षति डुकृण् करणे।।

भज – भज ले; गोविन्दं – गोविन्द को; भज – भज ले; गोविन्दं – गोविन्द को; गोविन्दं – गोविन्द को; भज – भज ले; मूढ़मते – हे मूर्ख; सम्प्राप्ते – प्राप्त होने पर; सन्निहिते काले – निश्चित काल; न हि – नहीं ही; रक्षति – रक्षा करेगा; डुकृण् करणे – डुकृण् करण।।

हे मूर्ख! गोविन्द का भजन कर, गोविन्द का भजन कर! गोविन्द का ही भजन कर! क्योंकि जब तुम्हारी मृत्यु आगेगी, तब ये 'डुकृण् करण' रक्षा नहीं करेगा।

Seek Govind, Seek Govind, Seek Govind, O Fool! When the appointed time (death) comes grammar-rules surely will not save you.

2. मूढ़ जहीहि धनागमतृष्णां कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं वित्तं तेन विनोदय चित्तम्।।

मूढ़ – हे मूर्ख!; जहीहि – छोड दें; धनागम – धन की प्राप्ति की; तृष्णां –प्यास को; कुरु – कर; सद्बुद्धिं – परमात्म विषयक विचार; मनसि – मन में; वितृष्णाम् – तृष्णारहित में। यत् – जो भी; लभसे – प्राप्त करेगा; निजकर्मोपात्तं – अपने कर्म के फलस्वरूप; वित्तं – वित्त से; तेन – उसके द्वारा; विनोदय – प्रसन्न हो; चित्तम् – चित्त को।

हे मूर्ख! धनविषयक प्यास को छोड़ दें, उस प्यासरहित मन में परमात्माविषयक विचार कर। जो भी अपने कर्मों से प्राप्त हों, उसीमें तुम्हारा चित्त प्रसन्न रहें।

O Fool! Give up the thirst to acquire wealth. When the mind is cleansed of passions, with a passionless mind one must meditate upon the Reality. Live joyously in the contentment and satisfaction with what you get 'as a result of our actions'.

↑

3. नारीस्तनभरनाभीदेशं दृष्ट्वा मा गा मोहावेशम्।
एतन्मांस वसादिविकारं मनसि विचिन्तय वारं वारम्।।

नारीस्तनभरनाभीदेशं – स्त्री के स्तन और नाभीप्रदेश को; दृष्ट्वा – देखकर; मा – मत; गा – प्राप्त हो; मोहावेशम् – मोह के आवेश को। एतत् – यह; मांसवसादि विकारं – मांस, चर्बी आदि के विकार को; मनसि – मन में; विचिन्तय – चिन्तन करो; वारं वारम् – बार बार।।

स्त्री के स्तन, नाभीदेश को देखकर मोह के आवेश में न हो, यह सब मांस और चर्बी आदि के विकार मात्र है। इस बात को मन में बार बार चिन्तन करो।

Do not get deluded by seeing the full bosom & navel of women. These are modification of flesh and fat. Always repeat these in your mind.

4. नलिनीदलगत जलमतितरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम्।।

नलिनीदलगत – कमल की पंखुडी पर; जलम् – जल; अतितरलं – अत्यन्त चपल; तद्वत् – वैसे ही; जीवितम् जीवन; अतिशयचपलम् – अत्यन्त चपल है। विद्धि – जानों; व्याधि – रोग; अभिमानग्रस्तं – अभिमान से ग्रसित; लोकं – लोक; शोकहतं– शोक से आकान्त; च – और; समस्तम् – सम्पूर्ण।

जिस प्रकार कमल की पंखुडी पर विराजमान जल की बुंद अत्यन्त चपल होती है, वैसे ही यह जीवन भी अत्यन्त चपल है। समस्त लोक रोग, अभिमान और शोक से आकान्त है यह जानों।

The water-drop playing on a lotus petal has an extremely uncertain existence; so also is life ever unstable. Understand, the very world is consumed by disease and conceit, and is riddled with pangs.

↑

5. यावद्वित्तोपार्जनसक्तः तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे।।

यावत् – जब तक; वित्त उपार्जन सक्तः – धन के अर्जन में समर्थ; तावत् – तब तक; निजपरिवारः – अपना परिवार; रक्तः – आसक्त है। पश्चात् – अन्त में; जीवति – जीता है; जर्जरदेहे – जर्जरित शरीर में; वार्तां – खबर; को अपि – कोई भी; न – नहीं; पृच्छति – पूछता है; गेहे – घर में।

जब तक व्यक्ति धन का अर्जन करने में सक्षम होता है, तब तक ही अपना परिवार आसक्त रहता है। अन्त में जब शरीर जर्जर हो जाता है, तो कोई भी खबर तक नहीं पूछता है।

So long as a man is fit and able to support his family, see what affection all those around him show. But no one at home cares to even have a word with him when his body totters due to old age.

6. यावत्पवनो निवसति देहे तावत्पृच्छति कुशलं गेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये।।

यावत् – जब तक; पवनो – वायु; निवसति – वास करती है; तावत् – तबतक; पृच्छति – पूछते हैं; कुशलं – कुशलता; गेहे – घर में; गतवति – चले जाने पर; वायौ – प्राण; देह अपाये – शरीर छोड़कर; भार्या – पत्नी; बिभ्यति – भयभीत होती है; तस्मिन् – उस; काये – शरीर से।

जब तक प्राण शरीर में बसते है, तबतक ही घर में कुशलता पूछी जाती है। जहां प्राण शरीर से नीकल जाते है, तो पत्नी भी उस शरीर से भयभीत होती है।

As long as life is in the body (ie, one is alive), family members enquire kindly about his welfare. But when the life departs from the body and body decays, even his wife is afraid of that corpse.

↑

7. बालस्तावत्क्रीडासक्तः तरुणस्तावत्तरुणीसक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तासक्तः परमे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः।।

बालः – बालक; तावत् – तब तक; क्रीडासक्तः – खेल में आसक्त; तरुणः – युवा; तावत् – तब तक; तरुणी – युवती में; सक्तः – आसक्त; वृद्धः – वृद्ध; तावत् – तब तक; चिन्तासक्तः – चिन्ता में आसक्त; परमे – परं; ब्रह्मणि – ब्रह्म में; को अपि – कोई भी; न सक्तः – आसक्त नहीं है।

जब तक बालक होता है, तब तक खेल में आसक्त रहता है, जब युवा होता है, तब युवती में आसक्त होता है। वृद्ध होने पर चिन्ताग्रस्त रहता है। विडम्बना यह है कि परब्रह्म में कोई भी अनुरक्त नहीं होता है।

So long as one is in one's boyhood, one is attached to play; so long as one is in youth, one is attached to one's own young woman (passion); so long as one is in old age, one is attached to anxiety (pang); yet hardly anyone who yearns to be attached to Brahman that is limitless.

8. का ते कान्ता कस्ते पुत्रः संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं कः कुतः आयातः तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रातः।।

का – कौन; ते – तुम्हारी; कान्ता – पत्नी; कः – कौन; ते – तुम्हारा; पुत्रः – पुत्र; संसारः – संसार; अयम् – यह; अतीव – अत्यन्त; विचित्रः – विचित्र है। कस्य – किसके; त्वं – तुम; कुतः – कहां से; आयातः – आए हो, तत्त्वं – तत्व का; चिन्तय – चिन्तन करो; तद् – उस; इह – इस प्रकार; भ्रातः – भाई।

हे भाई! तुम कौन हो? तुम्हारी पत्नी कौन है? तुम्हारा पुत्र कौन है? यह संसार अत्यन्त विचित्र है। अतः तुम कौन हो? कहां से आए हो – इस तरह तत्त्व का चिन्तन करो।

Who is your wife? Who is your son? Strange is this samsara. Of whom are you? From where have you come? Brother, ponder over these truths here.

↑

9. सत्संगत्वे निस्संगत्वं निस्संगत्वे निर्मोहत्वम्।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्तिः।।

सत्संगत्वे – सत्संग से; निस्संगत्वं – असंगता; निस्संगत्वे – असंगता से; निर्मोहत्वम् – मोह निवृत्ति; निर्मोहत्वे – मोह की निवृत्ति से; निश्चलतत्त्वं – तत्व का निश्चय; निश्चलतत्त्वे – तत्त्व के निश्चय से; जीवन्मुक्तिः – जीवन्मुक्ति।

सत्संग से असंगता होती है, असंगता से मोह की निवृत्ति, मोह निवृत्त होने पर तत्त्व का निश्चय होता है। और तत्त्व का निश्चय होने पर जीवन्मुक्ति की प्राप्ति होती है।

The company of the good weans one away from false attachments; from non-attachment comes freedom from delusion, when the delusion ends, the mind becomes unwavering and steady and from an unwavering and steady mind comes Jeevat Mukti (liberated in life).

10. वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारः ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः।।

वयसि – उम्र; गते – बीत जाने पर; कः – कैसा; कामविकारः – कामना का विकार; शुष्के – सूखने पर; नीरे – जल; कः – कैसां; कासारः – तालाब; क्षीणे – क्षीण होने पर; वित्ते – धन के; कः – कैसा; परिवारः – परिवार; ज्ञाते – जानने पर; तत्त्वे – तत्त्व को; कः – कैसा; संसारः – संसार।।

उम्र बीत जाने पर कामविकार कहां रहता है? पानी सूख जाने पर तालाब कहां रहता है? धन क्षीण होने पर परिवार कहां जुड़ा रहता है? वैसे ही तत्त्व को जान लेने पर संसार कहां रहता है?

When youth is gone, where is the lust and its play? When water is evaporated, where is the lake? When the wealth is reduced, where are the relatives? When Truth is realized, where is the (snare of) Samsaara.

↑

11. मा कुरु धनजनयौवनगर्वं हरति निमेषात्कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं बुद्ध्वा ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा।।

मा – मत; कुरु – कर; धनजन – धन, प्रतिष्ठा, यौवनगर्वं – यौवन का गर्व; हरति – हर लेता है; निमेषात् – क्षणमात्र में; कालः – काल; सर्वम् – सब को। मायामयम् – मायामय; इदम् – यह; अखिलं – सब को; बुद्ध्वा – जानकर; ब्रह्मपदं – ब्रह्मपद में; त्वं – तुम; प्रविश – प्रवेश करो; विदित्वा – जानकर।।

तुम धन, मान–प्रतिष्ठा, युवावस्था का अभिमान मत करो। इन सबको काल क्षणमात्र में हर लेता है। इन सब को मायामय जानते हुए तथा ब्रह्मपद को जानकर उसमें तुम प्रवेश करो।

Take no pride in your possession, in the people (at your command), in the youthfulness (that you have). Time loots away all these in a moment. Leaving aside all these, after knowing their illusory nature, realize the state of Brahman.

12. दिनयामिन्यौ सायंप्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुंचत्याशावायुः।।

दिनयामिन्यौ – दिन और रात; सायंप्रातः – शाम और सुबह; शिशिरवसन्तौ – शिशिर और वसन्त; पुनः – फिर से; आयातः – आते है। कालः – काल; क्रीडति – खेल रहा है; गच्छति – जा रही है; आयुः – उम्र; तदपि – फिर भी; न – नहीं; मुंचति – छोडती है; आशावायुः – आशा रूपी वायु का प्रवाह।।

दिन–रात, शाम–सुबह, शिशिर–वसन्त बार बार आते है, जाते है। ऐसा लगता है कि, मानो काल कीडा कर रहा है। सतत उम्र भी ढलती जाती है, फिर भी आशा रूपी वायु का प्रवाह छोड़ता नहीं है।

Day and night, dawn and dusk, winter and spring come and depart again and again. Time thus frolics and plays and life ebbs away. Yet, one does not give up the gusts of desires.

↑

13. का ते कान्ता धनगतचिन्ता वातुल किं तव नास्ति नियन्ता।
त्रिजगति सज्जन संगतिरेका भवति भवार्णव तरणे नौका।।

का – क्यों; ते – तुम्हारी; कान्ता – पत्नी; धनगतचिन्ता – धन विषयक चिन्ता; वातुल – मूर्ख; किं – क्या; तव – तुम्हारा; नास्ति – नहीं है; नियन्ता – ईश्वर। त्रिजगति – तीनों लोक में, सज्जन – सत्पुरुषों का; संगतिः – संग; एका – एकमात्र; भवति – होता है; भवार्णव – भवसागर; तरणे – तैरने के लिए; नौका – नाव।।

हे मूर्ख! तुम्हे अपनी पत्नी, धन विषयक चिन्ता क्यों है? क्या तुम्हारा कोई स्वामी नहीं है? इन तीनों लोक में भवसागर को तैरने की एकमात्र नौका सत्पुरुषों का संग ही है।

O Distracted one! why worry about wife, wealth, etc. Is there no one to guide you? Know that in the three worlds, only the association with good people alone can save you as a boat to cross the sea of life.

14. जटिलो मुण्डी लुंचितकेशः काषायाम्बर बहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि न च पश्यति मूढः ह्युदरनिमित्तं बहुकृतवेषः।।

जटिलो – जटाधारी; मुण्डी – मुण्डन किया हुआ; लुंचितकेशः – नोचे हुए बाल; काषाय अम्बर – गेरु वस्त्रधारी; बहुकृतवेषः – अनेकों वेशधारी। पश्यन् – देखते हुए; अपि – भी; न – नहीं; च – ही; पश्यति – देखता है; मूढ़ः – मूर्ख; हि – क्योंकि; उदरनिमित्तं – पेट भरने के लिए; बहुकृतवेषः – अनेकों वेश धारण किए है।

किसी ने जटा बढ़ा रखी है, किसी ने सिर मुण्डवा रखा है, किसी ने बाल नोंचवा लिए है, किसी ने गेरु वस्त्र धारण कर रखे हैं। जो तथ्य को देखकर भी नहीं देख पाते है, वे सभी मूर्ख है। वस्तुतः इन्होंने विविध प्रकार के वेश उदर–पोषण निमित्त ही धारण किए हैं।

There are many who go with matted locks, many who have clean shaven heads, many whose hairs have been plucked out; some are clothed in saffron, yet others in various colors --- all just for a livelihood. Seeing truth revealed before them, still the foolish ones see it not.

↑

15. अंगं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुंचत्याशापिण्डम्।।

अंगं – शरीर; गलितं – गल गया है; पलितं – सफेद; मुण्डं – सिर; दशनविहीनं – दांत से रहित; जातं – हो गया है; तुण्डम् – जबड़ा। वृद्धः – वृद्ध; याति – जा रहा है; गृहीत्वा – धारण करके; दण्डं – दण्ड; तदपि – फिर भी; न मुंचति – नहीं छोड़ता है; आशापिण्डम् – आशा रूपा पिण्ड।।

एक वृद्ध हाथ में दण्डा लेकर जा रहा है – जिसके सभी अंग गल गए है, बाल सफेद हो चूके है, जबड़ा दांतों से रहित हो चूका है, फिर भी आशा के पिण्ड ने उसे छोड़ा नहीं है।

The body has become worn out. The head has become bald or turned grey. The mouth has become toothless. The old man moves about with the support of crutches. Even then the attachment is so strong that he clings firmly to the bundle of (fruitless) desires.

16. अग्रे वह्नि पृष्ठे भानू रात्रौ चुबुकसमर्पित जानू।
करतलभिक्षस्तरुतलवासः तदपि न मुंचत्याशापाशः।।

अग्रे – आगे; वह्नि – आग; पृष्ठे – पीछे; भानुः – सूर्य; रात्रौ – रात्रि में; चुबुकसमर्पित – घूटनों पर टिकी हुई; जानू – ठोड़ी; करतलभिक्षः – हाथ में ही भिक्षा, तरुतलवासः – वृक्ष के नीचे वास है। तदपि – फिर भी; न मुंचति – नहीं छोडता है; आशापाशः – आशा का पाश।

सामने आग, पीछे सूर्य, रात बीतने पर वह अपनी ठुड्डी को घुंटनों से सटाकर बैठता है, वह अपने हाथों में भिक्षा प्राप्त करता है और किसी वृक्ष के नीचे रहता है। फिर भी आशा का फन्दा उसे नहीं छोड़ता।

In front the fire, at the back the sun, at night he curls up the body, he receives alms in his own scooped palm and lives under the shelter of some tree, and yet he is a puppet at the hands of passions and desires.

↑

17. कुरुते गंगासगरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीन सर्वमतेन भजति न मुक्तिं जन्मशतेन।।

कुरुते – करते हुए; गंगासागरगमनं – गंगासागर की यात्रा; व्रतपरिपालनम् – व्रत का अच्छी तरह पालन; अथवा – अथवा; दानं – दान। ज्ञानविहीन – ज्ञान से रहित; सर्वमतेन – सभी के मत अनुसार; भजति न – प्राप्त नहीं; मुक्तिं – मुक्ति को; जन्मशतेन – अनेकों जन्मों में।

कोई सेंकडों जन्मों तक गंगासागर रूप तीर्थयात्रा, व्रत का अच्छी तरह पालन, दान करता रहे, तो भी यदि ज्ञान प्राप्त नहीं किया तो उसे मुक्ति प्राप्त नहीं होती है – यह सभी सम्प्रदायों का मत है।

One may, in pilgrimage, go to where Ganges meets the ocean, called the Ganga Sagara, or observes vows, or distributes gifts in charity. If he is devoid of first hand-experience –of –the truth (jnanam), according to all school of thoughts, he gains no release, even in a hundred lives.

18. सुरमन्दिरतरुमूलनिवासः शय्या भूतलमजिनं वासः।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः।।

सुरमन्दिर – देवस्थान; तरुमूल – वृक्ष के नीचे; निवासः – वास; शय्या – बिछौना; भूतलम् – पृथ्वी; अजिनं – पशुचर्म; वासः – वस्त्र। सर्वपरिग्रह – सभी संग्रह; भोगत्यागः – भोगों का त्याग; कस्य – किसको; सुखं – सुख; न करोति – नहीं करता है; विरागः – वैराग्य।।

जिसका निवास किसी मन्दिर के वृक्ष के नीचे है, पृथ्वी बिछौना है, तथा पशु का चर्म वस्त्र है। जिसने सभी भोग्यपदार्थ के संग्रह का त्याग किया है। ऐसा वैराग्य किसे सुख नहीं देता है!

No one can disturb the peace of mind and viraaga, if one is willingly taking shelter in temples, under trees, sleeping on the naked ground, wearing a deer skin, and thus renouncing all idea of possession and thirst to enjoy.

↑

19. योगरतो वा भोगरतो संगरतो वा संगविहीनः।
यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं नन्दति नन्दति नन्दत्येव।।

योगरतो – योग में रत; वा – अथवा; भोगरतो – भोग में रत; वा – अथवा; संगरतो – भीड़ में रत; वा – अथवा; संगविहीनः – अकेला; यस्य – जिसका; ब्रह्मणि – ब्रह्म में; रमते – रमता है; चित्तं – चित्त; नन्दति नन्दति नन्दति एव – सदैव ही आनन्दित रहता है।

कोई योग में रम रहा हो या कोई भोग में रम रहा हो। कोई भीड़ के मध्य में हो, वा कोई एकान्त में हो। जिसका चित्त ब्रह्म में रम रहा है, वह किसी भी स्थिति में हो – सदैव आनन्दित रहता है।

One may take delight or revel in Yoga or bhoga, may have attachment or detachment or in other words, let one seek enjoyment in company or in solitude, but only he whose mind revels in the bliss of Brahman, will enjoy and verily he alone enjoys.

20. भगवद्गीता किंचिदधीता गंगाजललवकणिका पीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा क्रियते तस्य यमेन न चर्चा।।

भगवद्गीता – भगवद्गीता; किंचिदधीता – थोड़ा सा अध्ययन किया हो; गंगाजल – गंगाजल; लवकणिका – थोडी सी बुन्द; पीता – पीया हो; सकृद् अपि – एक बार भी; येन – जिसके द्वारा; मुरारि – मुरारि; समर्चा – अर्चना की जाएं; क्रियते – करते हैं; तस्य – उसकी; यमेन – यम के द्वारा; न – नहीं; चर्चा – चर्चा।

यदि किसी ने भगवद्गीता का थोडा सा भी अध्ययन किया हो, गंगा का एक बुन्द भी जल पीया हो, मुरारि की एक बार भी भली–भांति अर्चना कर ली – उसके पास यमराज नहीं आते हैं।

Even a little study and understanding of Srimad Bhagavad Gita, or sipping of even a drop of the waters of holy Ganges or even a little worship of Murari there is no discussion (quarrel) with Yama, the Lord of Death.

21. पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयाऽपारे पाहि मुरारे।।

पुनः अपि – बार बार; जननं – जन्म; पुनः अपि – बारबार; मरणं – मृत्यु; पुनः अपि – बारबार; जननी जठरे – माता के गर्भ में; शयनम् – वास करना; इह – यहां; संसारे – संसार से; खलु दुस्तारे – निश्चय ही दुस्तर। कृपया – कृपा करके; अपारे – अपार से; पाहि – बचाईएं; मुरारे – हे मुरारि।

बार बार जन्म होना, बारबार मृत्यु होना, बार बार माता के गर्भ में वास करना। हे मुरारि! ऐसे इस अपार, दुस्तर संसार से हमें पार लगाइएं।

Undergoing the pangs of birth again and again, passing through the throes of death again and again, lying in the mother's womb over and over again, this process of samsaara is very hard to cross, save me Muraari (O destroyer of Mura) through the Infinite Kindness.

22. रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जित पन्थः।
योगी योगनियोजित चित्तः रमते बालोन्मत्तवदेव।।

रथ्याचर्पट – चीथड़े; विरचितकन्थः – बनी हुई कन्था; पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः – पुण्य और पाप से रहित मार्ग; योगी – योगी; योगनियोजित – योग में लगा हुआ; चित्तः – मन; रमते – रमता है; बाल उन्मत्तवद् – बालक तथा पागल की तरह; एव – ही।

योगी जो चीथडों से बनी हुई कन्था धारण करके, पाप–पुण्य से रहित मार्ग पर चल रहा है, जिसका मन सदैव योग में लगा हुआ है – वह बालक वा पागल की तरह मानो रमता है।

The yogin who wears but a godadi, who walks the path that is beyond merit and demerit, whose mind is joined in perfect Yoga with its goal, revels (in God-consciousness) – and lives thereafter – as a child or as a madman.

↑

23. कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचाररम्।।

कः – कौन; त्वं – तुम; कः – कौन; अहं – मैं; कुतः – कहां से; आयातः – आया हूं; का – कौन; मे – मेरी; जननी – माता; को – कौन; मे – मेरे; तातः – पिता; इति – इस प्रकार; परिभावय – चिन्तन करो; सर्वम् – सब को; असारं – असार; विश्वं – जगत को; त्यक्त्वा – छोड़कर; स्वप्नविचारम् – स्वप्न का निश्चय।

तुम कौन हो, मैं कौन हूं, कहां से आया हूं? मेरी माता एवं पिता कौन है? इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व को त्यागकर स्वप्नवत् असार है – इस प्रकार करके चिन्तन करो।

Who are you? Who am I? From where did I come? Who is my mother? Who is my father? Thus enquire, leaving aside the entire world-of-experience, essence less and a mere dreamland, born of imagination.

24. त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः व्यर्थं कुप्यसि मयि असहिष्णुः।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं वांच्छस्यचिराद्यदि विष्णुत्वम्।।

त्वयि – तुझ में; मयि – मुझ में; च अन्यत्र – और अन्य जगह पर; एकः – एक; विष्णुः – विष्णु; व्यर्थं – व्यर्थ; कुप्यसि – कोधित हो रहे हो; मयि – मुझ पर; असहिष्णुः – अधीर होकर; भव – बनो; समचित्तः – समत्वयुक्त; सर्वत्र – सब जगह; त्वं – तुम; वांछसि – इच्छते हो; अचिराद् – शीघ्र ही; यदि – अगर; विष्णुत्वम् – विष्णुपद।

तुझ में, मुझ में और अन्य जगह पर भी एक ही विष्णु है। तुम व्यर्थ ही अधीर होकर मुझ पर कोधित हो रहे हो। यदि तुम शीघ्र ही विष्णुपद प्राप्त करना चाहते हो तो सदैव समत्व से युक्त हो जाओ।

In you, in me and everywhere there dwells only one, the All-pervading Reality, i.e., Vishnu. Being impatient, You are unnecessarily getting angry with me. If you want to attain soon the Vishnu status, be equal-minded in all circumstances.

25. शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्।।

शत्रौ – शत्रु में; मित्रे – मित्र में; पुत्रे – पुत्र में; बन्धौ – भाई में; मा कुरु – मत करो। यत्नं – प्रयास; विग्रहसन्धौ – विच्छेद अथवा संधि का; सर्वस्मिन् अपि – सब में ही; पश्य – देखों; आत्मानं – आत्मा को; सर्वत्र – सब जगह; उत्सृज – त्यागों; भेदाज्ञानम् – अज्ञानजनित भेद को।।

शत्रु–मित्र में, पुत्र में, भाई में सन्धि वा विच्छेद के प्रयास मत करो। सब में ही अपनी आत्मा को देखों और अज्ञानजनित भेद का त्याग करो।

Do not waste your efforts to win the love of or to fight against friend or foe, son or relative. Seeking the Self everywhere, lift the sense of difference (plurality) born out of ignorance.

26. कामं क्रोधं लोभं मोहं त्यक्त्वाऽऽत्मानं पश्यति सोऽहम्।
आत्मज्ञानविहीनामूढाः ते पच्यन्ते नरकनिगूढाः।।

कामं – काम का; क्रोधं – कोध का; लोभं – लोभ का; मोहं – मोह का; त्यक्त्वा – त्यागकर; आत्मानं – आत्मा को; पश्यति – देखता है; सः अहम् – वह मैं हूं। आत्मज्ञानविहीना – आत्मज्ञान से रहित; मूढाः – मूर्ख; ते – वे लोग; पच्यन्ते – पीड़ित होते है; नरकनिगूढाः – घोर नरक।।

काम, कोध, लोभ, मोह को त्यागकर साधक अपने आपको 'वह मैं हूं' इस तरह देखता है। जो आत्मज्ञान से रहित मूर्ख है, वह तो घोर नरक में पीड़ित होता रहता है।

Leaving desire, anger, greed, and delusion, the seeker sees in the Self, 'He am I'. They are fools who have no Self-knowledge, and they (consequently), as captives in hell, are tortured.

↑

27. गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसंगे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम्।।

गेयं – गाना चाहिए; गीता नामसहस्रं – गीता और विष्णुसहस्रनाम; ध्येयं – ध्यान करना चाहिए; श्रीपतिरूपम् – विष्णु के रूप का; अजस्रम् – सदा। नेयं – ले जाएं; सज्जनसंगे – सत्संग में; चित्तं – चित्त को; देयं – देना चाहिए; दीनजनाय – दीन लोगों को; च वित्तम् – धन को।

नित्य गीता और विष्णुसहस्रनाम का गान करना चाहिए, श्रीपति का ध्यान करना चाहिए। अपने मन को सत्संग में लगाना चाहिए और दीन लोगों को दान देना चाहिए।

Regularly sing the glory of God as given in Srimad Bhagavad Gita and Sri Vishnusahasranamam, always meditate upon the form of Aadi Purusha Sri Mahavishnu, the Lord of Lakshmi, make every effort to take the mind towards the company of the good, noble and holy, and share the wealth with the poor and needy.

28. सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणम् तदपि न मुंचति पापाचरणम्।।

सुखतः – सुख के लिए; क्रियते – करते है; रामाभोगः – शारीरिक भोग; पश्चाद् – बाद में; हन्त – दु:ख की बात है; शरीरे – शरीर में; रोगः – रोग। यद्यपि – यद्यपि; लोके – लोक में; मरणं – मृत्यु; शरणम् – अन्त है; तदपि – फिर भी; न मुंचति – नहीं छोडता है; पापाचरणम् – पाप का आचरण।।

मनुष्य सुख के लिए शारीरिक भोग करता है, और यह दु:ख की बात है कि बाद में शरीर रोग से ग्रस्त होता है। यद्यपि अन्त में मृत्यु होनी है, फिर भी वह पाप का आचरण नहीं छोड़ता है।

One indulges in carnal pleasures first and later on becomes prey to diseases (of the body). Though the death brings an end to everything, man does not leave his sinful behavior.

↑

29. अर्थमनर्थं भावय नित्यं नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः।।

अर्थम् – अर्थ को; अनर्थं – अनर्थकारी; भावय – चिन्तन करो; नित्यं – नित्य; नास्ति – नहीं है; ततः – उसमें; सुखलेशः – थोडा सा भी सुख; सत्यम् – सत्य है। पुत्राद् – पुत्र से; अपि – भी; धनभाजां – धनवान को; भीतिः – भय; सर्वत्र – सर्वत्र; एषा – यही; विहिता रीतिः – प्रचलन है।

अर्थ को सदैव अनर्थकारी चिन्तन करो। उससे लेशमात्र भी सुख नहीं है – यह सत्य है। धनी को पुत्र से भी भय रहता है और सर्वत्र यही प्रचलन है।

'Wealth is calamitous.' thus reflect constantly: the truth is that there is no happiness at all to be got from it. To the rich, there is fear even from one's own son. this is the way with wealth everywhere.

30. प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्यविवेकविचारम्।
जाप्यसमेत समाधिविधानं कुर्ववधानं महदवधानम्।।

प्राणायामं – प्राणायाम; प्रत्याहारं – प्रत्याहार; नित्यानित्य – नित्य और अनित्य का; विवेकविचारम् – विवेकपूर्वक विचार। जाप्यसमेत – जपसहित; समाधिविधानं – समाधि का अभ्यास; कुरु – करो; अवधानं – प्रयास; महद् अवधानम् – तीव्र प्रयास।

प्राणायाम, प्रत्याहार, नित्य–अनित्य के विवेकपूर्वक विचार तथा जपसहित समाधि का अभ्यास करना चाहिए। उसके लिए तीव्र प्रयास करना चाहिए।

The control of all activities (of life's manifestations in you), the sense-withdrawal (from their respective sense-objects), the reflection (consisting of discrimination between the permanent and the impermanent), along with japa and the practice of reaching the total-inner-silence (samaadhi) – these, perform with care… with great care.

31. गुरुचरणाम्बुजनिर्भरभक्तः संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानसनियमादेव द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम्।।

गुरुचरण–अम्बुज – गुरु के चरणकमल में; निर्भरभक्तः – समर्पित भक्त; संसारात् – संसार से; अचिराद् – शीघ्र; भव – हो जाओ; मुक्तः – मुक्त। सेन्द्रियमानसनियमाद् – इन्द्रिय सहित मन के संयमित करने से; एव – ही; द्रक्ष्यसि – देखोगे; निजहृदयस्थं – अपने हृदय में स्थित; देवम् – परमात्मा को।

गुरु के चरणकमल में समर्पित भक्त! तुम संसार से शीघ्र मुक्त हो जाओ। अपनी इन्द्रियों सहित मन को संयमित करके ही अपने हृदय में स्थित परमात्मा को देखोगे।

O devotee of the lotus-feet of the teacher! may you become liberated soon from the samsāra through the discipline of the sense-organs and the mind. You will experience (behold) the Lord that dwells in your own heart.